Class XII Session 2025-26
Subject - Hindi Core
Sample Question Paper - 5

निर्धारित समय: 3 घंटे **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए :-
- यह प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभाजित है।
- खंड - क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- खंड - ख में पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- खंड - ग में पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड क (अपठित बोध)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (10)** **[10]**

संवाद में दोनो पक्ष बोलें यह आवश्यक नहीं। प्रायः एक व्यक्ति की संवाद मे मौन भागीदारी अधिक लाभकर होती है। यह स्थिति संवादहीनता से भिन्न है। मन से हारे दुःखी व्यक्ति के लिए दूसरा पक्ष अच्छे वक्ता के रूप में नहीं अच्छे श्रोता के रूप में अधिक लाभकर होता है।

बोलने वाले के हावभाव और उसका सलीका उसकी प्रकृति और सांस्कृतिक-सामाजिक पृष्ठभूमि को पल भर में बता देते है। संवाद से संबंध बेहतर भी होते हैं और अशिष्ट संवाद सबंध बिगाड़ने का कारण भी बनता है। बात करने से बड़े-बड़े मसले, अंतर्राष्ट्रीय समस्याएँ तक हल हो जाती हैं। पर संवाद की सबसे बड़ी शर्त है कि एक-दूसरे की बातें पूरे मनोयोग से, संपूर्ण धैर्य से सुनी जाएँ। श्रोता उन्हें कान से सुने और मन से अनुभव करें तभी उनका लाभ है, तभी समस्याएँ सुलझने की संभावना बढ़ती है और कम-से-कम यह समझ में आता है कि अगले के मन की परतो के भीतर है क्या?

सच तो यह है कि सुनना एक कौशल है, जिसमें हम प्रायः अकुशल होते है। दूसरे की बात काटने के लिए, उसे समाधान सुझाने के लिए हम उतावले होते हैं और यह उतावलापन संवाद की आत्मा तक हमें पहुँचने नहीं देता। हम तो बस अपना झंडा गाड़ना चाहते हैं, तब दूसरे पक्ष को झुंझलाहट होती है। वह सोचता है व्यर्थ ही इसके सामने मुँह खोला। रहीम ने ठीक ही कहा था-"सुनी अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहें कोय।" ध्यान और धैर्य से सुनना पवित्र आध्यात्मिक कार्य है और संवाद की सफलता का मूल मंत्र है। लोग तो पेड़-पौधो से, नदी-पर्वतो से, पशु-पक्षियों तक से संवाद करते हैं। राम ने इन सबसे पूछा- “क्या आपने सीता को देखा?" और उन्हें एक पक्षी ने ही पहली सूचना दी थी। इसलिए संवाद की अनंत संभावनाओं को समझा जाना चाहिए।

(i) संवाद की सबसे बड़ी शर्त क्या है? (1)

(क) बोलने की कला

(ख) मौन भागीदारी

(ग) पूरे मनोयोग से सुनना

(घ) समस्या समाधान करना

(ii) रहीम के अनुसार लोग क्या नहीं करते हैं? (1)

(क) ध्यान से नहीं सुनते हैं

(ख) दूसरे की बात नहीं काटते हैं

(ग) बातों को बाँटते नहीं हैं

(घ) संवाद नहीं करते हैं

(iii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए - (1)

कथन (I) : संवाद में मौन भागीदारी संवादहीनता के समान है।

कथन (II) : ध्यान और धैर्य से सुनना संवाद की सफलता का मूल मंत्र है।

कथन (III) : दूसरे की बात को बिना काटे सुनना संवाद का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

कथन (IV) : संवाद से सभी प्रकार के संबंध बेहतर हो जाते हैं।

गद्यांश के अनुसार कौन-सा/से कथन सही हैं?

(क) केवल कथन (II) और (III) सही हैं।

(ख) केवल कथन (I) और (IV) सही हैं।

(ग) केवल कथन (I), (II) और (III) सही हैं।

(घ) केवल कथन (III) और (IV) सही हैं।

(iv) संवादहीनता से संवाद की मौन भागीदारी कैसे भिन्न होती है? (1)

(v) संवाद से संबंध कैसे बेहतर होते हैं और अशिष्ट संवाद का क्या प्रभाव होता है? (2)

(vi) श्रोता का ध्यान और धैर्य से सुनना क्यों आवश्यक है? (2)

(vii) सुनने का कौशल क्या है और हम इसमें अकुशल क्यों होते हैं? (2)

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (8)** **[8]**

अचल खड़े रहते जो ऊँचा शीश उठाए तूफानों में,
सहनशीलता, दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में
वही पंथ बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हों निर्झर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर।
आज देश की भावी आशा बनी तुम्हारी ही तरुणाई,
नए जन्म की श्वास तुम्हारे अंदर जगकर है लहराई।
आज विगत युग के पतझर पर तुमको नव मधुमास खिलाना,
नवयुग के पृष्ठों पर तुमको है नूतन इतिहास लिखाना।
उठो राष्ट्र के नवयौवन तुम दिशा-दिशा का सुन आमंत्रण,
जगो, देश के प्राण जगा दो नए प्रातः का नया जागरण।
आज, विश्व को यह दिखला दो हममें भी जागी तरुणाई,
नई किरण की नई चेतना में हमने भी ली अंगड़ाई।।

i. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर कथन के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन करें: (1)**

"अचल खड़े रहते जो ऊँचा शीश उठाए तूफानों में,
सहनशीलता, दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में।

I. कविता में दृढ़ता और सहनशीलता के बारे में बताया गया है।

II. कविता में यौवन की शांति और संतुलन की बात की गई है।

III. कविता में यौवन को सिर्फ एक संघर्ष के रूप में दर्शाया गया है।

क) कथन I और II सही हैं।

ख) कथन II और III सही हैं।

ग) केवल कथन III सही है।

घ) कथन I, II और III सही हैं।

ii. **'प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर' का क्या तात्पर्य है? (1)**

क) प्रगति केवल आसान रास्तों पर चलकर ही संभव है

ख) युवाओं का साहस और दृढ़ता प्रगति को वास्तविकता में बदलती है

ग) प्रगति केवल अनुभव से आती है

घ) प्रगति का अर्थ केवल भौतिक समृद्धि है

iii. **नीचे दिए गए कॉलम 1 को कॉलम 2 से मिलाकर सही विकल्प का चयन करें: (1)**

कॉलम 1	**कॉलम 2**
I. कविता में यौवन की प्रगति की भूमिका	1. संघर्ष और बाधाओं को पार करना
II. कविता में राष्ट्र के नवयौवन का आह्वान	2. देश के नए भविष्य का निर्माण करना
III. कविता में नूतन इतिहास बनाने का संदेश	3. नए युग का आरंभ करना

क) I - (1), II - (2), III - (3)

ख) I - (3), II - (2), III - (1)

ग) I - (2), II - (3), III - (1)

घ) I - (1), II - (3), III - (2)

iv. **'नए प्रातः का नया जागरण' का कविता में क्या अर्थ है? (1)**

v. **कविता में 'उठो राष्ट्र के नवयौवन' से कवि का क्या संदेश है? (2)**

vi. **'हममें भी जागी तरुणाई' पंक्ति का कवि किस भाव को प्रकट कर रहे हैं? (2)**

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. **दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।** **[6]**

   i. **भारत : विविधता में एकता** विषय पर निबंध लिखिए। **[6]**

   ii. **जैसी मेरी हिन्दी, वैसी उनकी तमिल** विषय पर अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

   iii. **वनों का महत्त्व** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

4. **निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर, किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए(2 X 4 = 8)** **[8]**

   i. **कैमरे में बंद अपाहिज** कविता में कुछ पंक्तियाँ कोष्ठकों में रखी गई हैं- आपकी समझ से इसका क्या औचित्य है? **[2]**

   ii. **बाज़ार का जादू** किस प्रकार हमें आकर्षित करता है। इसकी जकड़ से बचने का सीधा-सा उपाय क्या है? **[2]**

   iii. चर्चा करें- कलाओं का अस्तित्व व्यवस्था का मोहताज़ नहीं है। **[2]**

   iv. **उड़ने और खिलने** का कविता से क्या संबंध बनता है? कविता के बहाने के आधार पर बताइए। **[2]**

   v. **उषा** कविता के किन उपमानों को देखकर कहा जा सकता है कि यह कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द-चित्र है? **[2]**

5. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)** **[8]**

   i. विशेष लेखन के लिए सूचनाओं के स्रोत्र कौन से होते हैं? **[4]**

   ii. **डेस्क** और **बीट** किसे कहते हैं? इनका संबंध किनसे है? **[4]**

   iii. निम्नलिखित में से किसे आप **सिल्वर वेडिंग** कहानी की मूल संवेदना कहेंगे/कहेंगी और क्यों? **[4]**

      i. हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य

      ii. पीढ़ी का अंतराल

      iii. पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।
मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुःख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;

जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

i. **निज उर के उद्गार** से कवि का क्या तात्पर्य है?

क) अपने हृदय के केवल दुःख
ख) अपने हृदय से निकाल दी गई स्मृतियाँ
ग) अपने हृदय से भिन्न मनोभाव
घ) अपने हृदय की वाणी की अभिव्यक्ति

ii. कवि को संसार प्रिय क्यों नहीं है?

क) सभी विकल्प सही हैं
ख) संसार की समान स्थिति के कारण
ग) संसार की अपूर्णता के कारण
घ) संसार के बदलाव के कारण

iii. कवि के हृदय में कैसी अग्नि दहक रही है?

क) सभी कुछ नष्ट कर देने वाली अग्नि
ख) स्नेहरूपी अग्नि
ग) स्वयं को जलाने वाली विरहाग्नि
घ) ईष्या-द्वेष से पूर्ण अग्नि

iv. **मैं भव-मौजों पर मस्त बहा करता हूँ** पंक्ति में **भव-मौजो** से क्या अभिप्राय है?

क) संसार की लहरें
ख) विचारों की मस्ती
ग) भावों की लहरें
घ) संसार की संकीर्णता

v. कवि किसकी अपेक्षा नहीं करता है?

क) विचारों की
ख) प्रेम की
ग) साधनों की
घ) घृणा की

7. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

i. **छोटा मेरा खेत** कविता में कवि ने **रस के अक्षय पात्र** से रचनाकर्म की किन विशेषताओं का इंगित किया है? **[3]**

ii. व्याख्या करें - माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ।। **[3]**

iii. बात की चूड़ी मरने और ऐसे सहूलियत से बरतने से कवि का क्या अभिप्राय है? **बात सीधी थी पर** कविता के आधार पर लिखिए। **[3]**

8. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

i. किन-किन शब्दों का प्रयोग करके कवि **आलोक धन्वा** ने इस कविता को जीवंत बना दिया है? **[2]**

ii. **हम समर्थ शक्तिवान** और **हम एक दुर्बल को लाएँगे** पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है? कैमरे में बंद अपाहिज कविता के आधार पर बताइए। **[2]**

iii. कृषक अधीर होकर बादल को क्यों बुलाता है? **बादल राग** कविता के आधार पर लिखिए। **[2]**

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

इसी प्रकार स्वतंत्रता पर भी क्या कोई आपत्ति हो सकती है? गमनागमन की स्वाधीनता, जीवन तथा शारीरिक सुरक्षा की स्वाधीनता के अर्थों में शायद ही कोई 'स्वतंत्रता' का विरोध करे। इसी प्रकार संपत्ति के अधिकार, जीविकोपार्जन के लिए आवश्यक औज़ार व सामग्री रखने के अधिकार, जिससे शरीर को स्वस्थ रखा जा सके, के अर्थ में भी 'स्वतंत्रता' पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती। तो फिर मनुष्य की शक्ति के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की भी स्वतंत्रता क्यों नहीं प्रदान की जाए?
जाति-प्रथा के पोषक, जीवन, शारीरिक-सुरक्षा तथा संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो स्वीकार कर लेंगे, परंतु मनुष्य के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए जल्दी तैयार नहीं होंगे, क्योंकि इस प्रकार की स्वतंत्रता का अर्थ होगा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता किसी को नहीं है, तो उसका अर्थ उसे 'दासता' में जकड़कर रखना होगा, क्योंकि 'दासता' केवल कानून पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है।

उदाहरणार्थ, जाति प्रथा की तरह ऐसे वर्ग होना संभव है, जहाँ कुछ लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं। (बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर)

i. दासता में कौन-सी अवधारणा सम्मिलित नहीं है?

क) स्वाधीनता के साथ जीना
ख) दूसरों के द्वारा निश्चित कार्य करना
ग) इच्छा के विरुद्ध कार्य करना
घ) कानूनी पराधीनता का होना

ii. मनुष्य के प्रभावशाली प्रयोग से लेखक का क्या तात्पर्य है?

क) उसे शारीरिक स्वतंत्रता प्रदान की जाए
ख) उसे शारीरिक-सुरक्षा तथा संपत्ति का अधिकार दिया जाए
ग) उसे अपनी इच्छा से जाति के चयन का अधिकार मिले
घ) उसे अपनी इच्छा से कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाए

iii. जाति-प्रथा के पोषक यदि मनुष्य के लक्षण एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता दें, तब इसका क्या परिणाम होगा?

क) स्वतंत्रता को बढ़ावा मिलेगा
ख) लोकतांत्रिक मूल्य सुदृढ़ होंगे
ग) दासता को बढ़ावा मिलेगा
घ) कानूनी-पराधीनता बढ़ जाएगी

iv. निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A): इसी प्रकार संपत्ति के अधिकार, जीविकोपार्जन के लिए आवश्यक औज़ार व सामग्री रखने के अधिकार, जिससे शरीर को स्वस्थ रखा जा सके, के अर्थ में भी 'स्वतंत्रता' पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती।

कारण (R): मनुष्य की शक्ति के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की भी स्वतंत्रता क्यों नहीं प्रदान की जाए?

क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
ख) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।
ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
घ) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

v. गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

i. संपत्ति के अधिकार में स्वतंत्रता पर आपत्ति हो सकती है।
ii. स्वतंत्रता का अर्थ है दासता में जकड़ना।
iii. सभी लोग अपनी इच्छा के अनुसार ही पेशा अपनाते हैं।

उपरिलिखित कथनों में से कौन सही है/हैं?

क) केवल iii
ख) केवल ii
ग) केवल i
घ) इनमें से कोई नहीं

10. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

i. लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है? **[3]**

ii. **भक्तिन** पाठ के आधार पर भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में किए जाने वाले भेद-भाव का वर्णन कीजिए। **[3]**

iii. शिरीष के माध्यम से कोमल तथा कठोर भावों का सम्मिश्रण निबंधकार द्वारा कैसे किया गया? **[3]**

11. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

i. **पर्चेज़िंग पावर** से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए। **[2]**

ii. इंदर सेना पर पानी फेंके जाने पर लेखक की मान्यता को जीजी कैसे छिन्न-भिन्न कर देती हैं? **[2]**

iii. डॉ. आंबेडकर ने जाति-प्रथा के भीतर पेशे के मामले में लचीलापन न होने की जो बात कही है उसे अपने शब्दों में समझाइए। **[2]**

12. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[10]**

i. यशोधर बाबू अनेक बातों को **समहाउ इंप्रॉपर** मानते हैं और फिर उन्हें मान भी लेते हैं। इस आलोक में उनके चरित्र का विश्लेषण कीजिए। **[5]**

ii. **जूझ** के लेखक ने अपने मराठी शिक्षक सौंदलगेकर से किन गुणों और जीवन-मूल्यों को ग्रहण किया? क्या आज भी उनकी प्रासंगिकता है? **[5]**

iii. **अतीत में दबे पाँव** पाठ में एक ऐसे स्थान का वर्णन है जिसे बहुत कम लोगों ने देखा होगा, परंतु इससे आपके मन में उस नगर की एक तसवीर बनती है। किसी ऐसे ऐतिहासिक स्थल, जिसको आपने नज़दीक से देखा हो, का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। **[5]**

उत्तर

खंड क (अपठित बोध)

1. i. (ग) पूरे मनोयोग से सुनना
   ii. (ग) बातों को बाँटते नहीं हैं
   iii. (क) केवल कथन (II) और (III) सही हैं।
   iv. संवाद की मौन भागीदारी में एक व्यक्ति ध्यानपूर्वक सुनता है, जिससे समस्याएँ सुलझाने की संभावना बढ़ती है, जबकि संवादहीनता में किसी प्रकार का संचार नहीं होता।
   v. संवाद से संबंध बेहतर होते हैं क्योंकि यह समस्याओं के समाधान में मदद करता है और अंतर्राष्ट्रीय मसलों तक को हल करने में सहायक होता है। अशिष्ट संवाद संबंध बिगाड़ने का कारण बनता है और संवाद की आत्मा को क्षति पहुंचाता है।
   vi. श्रोता का ध्यान और धैर्य से सुनना आवश्यक है क्योंकि इससे वह बोलने वाले के मन की परतों को समझ सकता है। ध्यान और धैर्य से सुनना संवाद की सफलता का मूल मंत्र है और यह पवित्र आध्यात्मिक कार्य है।
   vii. सुनने का कौशल यह है कि हम दूसरे की बात ध्यान से सुनें और उसे अनुभव करें। हम इसमें अकुशल इसलिए होते हैं क्योंकि हम अक्सर दूसरे की बात काटने या उसे समाधान सुझाने के लिए उतावले होते हैं, जो संवाद की आत्मा तक हमें पहुँचने नहीं देता।
2. i. क) कथन I और II सही हैं।
   ii. ख) युवाओं का साहस और दृढ़ता प्रगति को वास्तविकता में बदलती है
   iii. क) I - (1), II - (2), III - (3)
   iv. 'नए प्रातः का नया जागरण' का अर्थ है एक नए दिन की शुरुआत, जो नई ऊर्जा, चेतना, और जागरूकता के साथ समाज और राष्ट्र में परिवर्तन लाने की क्षमता रखती है।
   v. कविता में 'उठो राष्ट्र के नवयौवन' से कवि युवाओं को प्रेरित कर रहे हैं कि वे अपनी ऊर्जा और उत्साह का उपयोग करके देश के पुनर्निर्माण और प्रगति में योगदान दें। यह एक आह्वान है कि वे राष्ट्र की दिशा बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।
   vi. 'हममें भी जागी तरुणाई' पंक्ति में कवि युवाओं की नई जागरूकता और उभरती हुई ऊर्जा को व्यक्त कर रहे हैं। यह भाव दर्शाता है कि युवा अब सोए हुए नहीं हैं; वे अब जाग चुके हैं और समाज में परिवर्तन लाने के लिए तैयार हैं।

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।

(i) **भारत : विविधता में एकता**

भारत एक ऐसा देश है जो अपनी विविधता के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। यहाँ विभिन्न धर्म, भाषाएँ, संस्कृतियाँ, और परंपराएँ एक साथ मिलकर एक अद्वितीय समाज का निर्माण करती हैं। इस विविधता के बावजूद, भारत में एकता की भावना हमेशा बनी रहती है, जो इसे एक विशेष स्थान प्रदान करती है।

भारत में “विविधता में एकता” की अवधारणा बहुत पुरानी है। यह विचार हमें सिखाता है कि भिन्नताओं के बावजूद, हम सभी एक हैं। यह एकता ही है जो हमें मजबूत बनाती है और हमें एक दूसरे के साथ जोड़ती है।

भारत में लगभग 1650 भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। यहाँ हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन, और कई अन्य धर्मों के लोग एक साथ रहते हैं। हर राज्य की अपनी एक विशेष संस्कृति, परंपरा, और त्योहार होते हैं। उदाहरण के लिए, बंगाल में दुर्गा पूजा, महाराष्ट्र में गणेश चतुर्थी, पंजाब में बैसाखी, और तमिलनाडु में पोंगल प्रमुख त्योहार हैं।

इतनी विविधताओं के बावजूद, भारतीय लोग एक दूसरे के धर्म, संस्कृति, और परंपराओं का सम्मान करते हैं। यह सहिष्णुता और आपसी सम्मान ही है जो हमें एकता के सूत्र में बांधता है। भारत में “विविधता में एकता” की भावना हमें सिखाती है कि भिन्नताओं के बावजूद, हम सभी एक हैं। यह एकता ही हमारी ताकत है और हमें एक विशेष स्थान प्रदान करती है। हमें इस एकता को बनाए रखना चाहिए और इसे और भी मजबूत बनाना चाहिए।

इस प्रकार, भारत में विविधता में एकता की भावना हमें एक दूसरे के साथ जोड़ती है और हमें एक मजबूत और समृद्ध समाज का निर्माण करने में मदद करती है।

(ii) **जैसी मेरी हिन्दी, वैसी उनकी तमिल**

भाषा किसी भी व्यक्ति की पहचान और संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा होती है। जैसे मेरी हिन्दी मेरे विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का माध्यम है, वैसे ही तमिल भाषा उनके लिए है। हिन्दी और तमिल दोनों ही प्राचीन और समृद्ध भाषाएँ हैं, जिनमें साहित्य, कला और संस्कृति की गहरी जड़ें हैं।

मेरी हिन्दी में जैसे मैं अपने विचारों को सहजता से व्यक्त कर सकता हूँ, वैसे ही तमिल भाषी व्यक्ति अपनी तमिल में कर सकता है। भाषा का ज्ञान और उसका सही उपयोग हमें एक-दूसरे से जोड़ता है और हमारी सांस्कृतिक विविधता को समृद्ध करता है।

तमिल भाषा की मिठास और उसकी साहित्यिक धरोहर भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी हिन्दी की। दोनों भाषाओं में कविताएँ, कहानियाँ और नाटक हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराते हैं और हमें सोचने पर मजबूर करते हैं।

इस प्रकार, जैसी मेरी हिन्दी है, वैसी ही उनकी तमिल है - दोनों ही भाषाएँ अपने-अपने स्थान पर महत्वपूर्ण और अनमोल हैं।

(iii) **वनों का महत्त्व**

आदिकाल से ही मनुष्य ने प्रकृति को खूब हरा भरा बनाया था. उस समय वातावरण स्वच्छता और स्वास्थ्य की दृष्टि से सर्वोत्तम था। वन इस वातावरण के जनक थे। अतः वातावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए पृथ्वी पर वनों का होना आवश्यक हैं। वन हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी हैं, किंतु सामान्य व्यक्ति इनके महत्व को समझ नहीं पाते। दैनिक जीवन में वनों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वृक्षों के अभाव में पर्यावरण शुष्क हो जाता है और सौंदर्य नष्ट हो जाता है।

वनों से हमें विभिन्न प्रकार की लकड़ियाँ; जैसे-इमारती लकड़ी, जलाने की लकड़ी, दवाई में प्रयोग होने वाली लकड़ी आदि प्राप्त होती हैं।

वृक्षों की लकड़ियाँ व्यापारिक दृष्टि से भी उपयोगी होती हैं। इनमें सागौन, देवदार, चीड़, शीशम, चंदन, आबनूस इत्यादि प्रमुख हैं। वनों से लकड़ी के अतिरिक्त अनेक उपयोगी वस्तुओं की प्राप्ति भी होती है, जिनका अनेक उद्योगों में कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है; जैसे-फर्नीचर उद्योग, औषधि उद्योग इत्यादि। वनों से हमें विभिन्न प्रकार के फल प्राप्त होते हैं, जो मनुष्य का पोषण करते हैं।

वनों से हमें अनेक जड़ी-बूटियाँ प्राप्त होती है। वनों में अनेक पशु-पक्षी होते हैं; जैसे-हिरण, नीलगाय, भालू, शेर, चीता, बारहसिंगा आदि। ये पशु वनों में स्वतंत्र विचरण करते है, भोजन और संरक्षण पाते हैं। वन गाय, भैस, बकरी, भेड़ आदि पालतू पशुओं के लिए विशाल चरागाह प्रदान करते हैं।

भारतीय कृषि वर्षा पर निर्भर रहती है और वर्षा मानसून पर निर्भर है। वन मानसून को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं और वर्षा से वन बढ़ते हैं। वन वायु को शुद्ध करते है, क्योंकि वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड को ग्रहण करके ऑक्सीजन छोड़ते है, जिससे पर्यावरण शुद्ध होता है। वनों से वातावरण का तापक्रम, नमी और वायु प्रवाह नियमित होता है, जिससे जलवायु में संतुलन बना रहता है।

वनों के कारण वर्षा का जल मंद गति से बहता है, जिससे भूमि कटाव की प्रक्रिया धीमी हो जाती है। साथ ही, पेड़-पौधों की जड़ें मिट्टी के कणों को सँभाले रहती हैं, जिससे भूमि कटाव नहीं होता। इससे भूमि ऊबड़-खाबड़ नहीं हो पाती और भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहती है। वनों का हमारे जीवन में योगदान स्पष्ट है। वन हमारे जीवन में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बहुत उपयोगी हैं। इसलिए वनों का संरक्षण और संवर्द्धन बहुत आवश्यक है।

4. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर, किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए(2 X 4 = 8)

(i) हमारी समझ से ये पंक्तियाँ कविता में आए संचालक द्वारा कही गई बातें हैं-
उदाहरण के लिए-
(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा बड़ा)
(हम खुद इशारे से बताएँगे कि क्या ऐसा?)
(यह अवसर खो देंगे?)
(यह प्रश्न पूछा नहीं जाएगा)
(आशा है आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे।)
(कैमरा बस करो नहीं हुआ रहने दो परदे पर वक्त की कीमत है)
(बस थोड़ी ही कसर रह गई)
कार्यक्रम का संचालक अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपंग व्यक्ति को विभिन्न प्रकार से रुलाने का प्रयास करता है। वह कभी अपंग व्यक्ति, कभी दर्शकों तथा कभी कैमरामेन को बोलता है। इसके माध्यम से स्पष्ट हो जाता है कि कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए संचालक किस हद तक स्वयं को गिरा सकता है। इन पंक्तियों के माध्यम से उसका दोगला रूप दिखाई देता है। कार्यक्रम के सामाजिक उद्देश्य को पूरा करने के स्थान पर वह स्वयं के कार्यक्रम को सफल बनाने में लगा रहता है। प्रस्तुत कविता में कोष्ठकों में दी गई पंक्तियाँ टेलीविजन स्टूडियों के भीतर की दुनिया को उभारने में पूर्ण रूप से सार्थक है।

(ii) बाज़ार का जादू चढ़ने पर हम भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं को खरीदना चाहते हैं। भले ही वे हमारे काम की हों या न हों। मन खाली होने पर बाज़ार की अनेक चीजों का निमंत्रण हम तक पहुँच जाता है, परंतु जब यह जादू उतरता है, तब हम यह जान जाते हैं कि फैंसी चीजें आरामदायक नहीं हैं, बल्कि वे बाधा ही उत्पन्न करती हैं। हाँ, इससे मन को थोड़ी देर के लिए संतुष्टि अवश्य मिल जाती है। इसकी जकड़ से बचने का सरल उपाय यह है कि आप बाज़ार में तब जाएँ, जब आपको अपनी आवश्यकताओं का पूर्ण ज्ञात हो अन्यथा आप फिर बाजार के जादू में फँस जाएँगे।

(iii) बहुत सुंदर पंक्ति है कि कलाओं का अस्तित्व व्यवस्था का मोहताज़ नहीं है। कलाकार अपने मन के भावों की अभिव्यक्ति अपनी कला रचना में करता है। कला मनुष्य के हृदय का बहुत भीतरी अंग है। इसे मनुष्य ने कहीं से सीखा नहीं है बल्कि स्वयं ही मनुष्य के दुखी या आनंदित हृदय से उपजी है। अतः जब मनुष्य सभ्य नहीं था, तब भी यह मनुष्य के साथ थी। कला को व्यवस्था की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए तो बस लगन की आवश्यकता है। सच्चे भाव की आवश्यकता है। जहाँ भाव होता है, यह वहीं विकसित हो जाती है। यह तो आज के मनुष्य ने इसे व्यवस्था में बाँधने की कोशिश की है। यदि गौर करें, तो यह स्वयं पैदा हो जाती है।

(iv) पंछी की उड़ान और कवि की कल्पना की उड़ान दोनों दूर तक जाती हैं। दोनों का लक्ष्य ऊँचाई मापना होता है। कविता में कवि की कल्पना की जो उड़ान है जिसकी सीमा अनन्त होती है, वह कल्पनाओं को पंख देकर अनंत ऊंचाइयों को छू सकता है इसीलिए कहा गया है - 'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि'
जिस प्रकार फूल खिलकर अपनी सुगंध एवं सौंदर्य से लोगों को आकर्षित कर आनंद और जीवन देता है उसी प्रकार कविता भी सदैव खिली रहकर लोगों को भावों -विचारों का रसपान कराती है, पाठकों में नवीन स्फूर्ति एवं ऊर्जा का संचार करती है। दोनों का उद्देश्य एक समान अर्थात पाठकों एवं रसिको के हृदय को सुकून पहुँचाना होता है।

(v) कवि के नीले शंख, राख से लीपा हुआ गीला चौका, सिल, स्लेट, नीला जल और गोरी युवती की मखमली देह आदि उपमानो को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है। इन्हीं उपमानों के माध्यम से कवि ने सूर्योदय का गतिशील वर्णन किया है। ये उपमान भी कविता को गति प्रदान करते हैं।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)

(i) विशेष लेखन के लिए निम्नलिखित स्रोत्र होते हैं- प्रेस कान्फ्रेंस, विज्ञप्ति, साक्षात्कार, सर्वे, सरकारी -गैरसरकारी संस्थाएं, संबंधित विभाग, इंटरनेट तथा अन्य संचार माध्यम एवं स्थायी अध्ययन सामग्री अति आवश्यक होते हैं।

(ii) समाचारपत्र, टी.वी., रेडियो चैनल में अलग-अलग विषयों पर विशेष लेखन के लिए निर्धारित स्थल को डेस्क कहते हैं। विभिन्न विषयों से जुड़े समाचारों के लिए संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। इसे ही बीट कहा जाता है। इनका सम्बन्ध विशेष लेखन से है।

(iii) उपरोक्त तीनों मूल्यों में मुझे पीढ़ी का अंतराल प्रतीत होता है। यशोधर बाबू किशनदा की तरह जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। किशनदा पुरातनपंथी थे। जबकि यशोधर बाबू के बच्चे आधुनिक पीढ़ी के हैं और स्वयं आत्म निर्भर भी है। वे अपने अनुसार खर्च और जीवन यापन करते हैं। उनकी माँ भी उनका समर्थन करती हैं। इस प्रकार जीवन में यशोधर बाबू अकेले पड़ जाते हैं। उनके जीवन में अनिर्णय की स्थिति बनी रहती है। यह मात्र पीढ़ियों के अंतराल के कारण है। पुरानी पीढ़ी संयुक्त परिवार का समर्थन करती है। वहीं नयी पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में हैं।

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।
मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुःख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

(i) **(घ)** अपने हृदय की वाणी की अभिव्यक्ति
व्याख्या:
अपने हृदय की वाणी की अभिव्यक्ति

(ii) **(क)** सभी विकल्प सही हैं
व्याख्या:
सभी विकल्प सही हैं

(iii) **(ग)** स्वयं को जलाने वाली विरहाग्नि
व्याख्या:
स्वयं को जलाने वाली विरहाग्नि

(iv) **(क)** संसार की लहरें
व्याख्या:
संसार की लहरें

(v) **(ग)** साधनों की
व्याख्या:
साधनों की

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) कविता 'छोटा मेरा खेत में ' रस के अक्षय पात्र के रूप में कवि की अभिव्यक्ति अर्थात उसके काव्य रचना की ओर संकेत किया गया है । जिस प्रकार अक्षयपात्र में निहित सामग्री कभी समाप्त नहीं होती और पात्र सर्वदा सभी को संतुष्टि प्रदान करता है उसी प्रकार कवि की कविता का रस एवं भाव सौन्दर्य अनंतकाल तक अपने पाठकों और श्रोताओं को आनंद देता रहता है।

(ii) तुलसीदास को समाज के उलाहनों-तानों से कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि समाज उनके बारे में क्या सोचता है, वे किसी पर आश्रित नहीं है। वे श्री राम का नाम लेकर दिन बिताते हैं, माँग कर खाते हैं और मस्जिद में सो जाते हैं। उन्हें किसी से कुछ भी लेना देना नहीं है। उन्हें अपने आराध्य के सिवा यश-अपयश की भी चिंता नहीं है।

(iii) बात की चूड़ी मरने और बात को सहूलियत से बरतने से कवि का अभिप्राय यह है कि किसी भी माध्यम का चुनाव कथ्य के भाव या अभिव्यक्ति के अनुरूप करना चाहिए। भाषा हमारे भावों को अभिव्यक्त करने का साधन या जरिया मात्र है। मूल बात कथ्य की स्पष्ट अभिव्यक्ति है, जो सहज भाषा के चुनाव और प्रयोग से अधिक बेहतर ढंग से होती है। कठिन और बोझिल भाषा का प्रयोग करने से हमारे अभीष्ट भाव अधिक स्पष्टता के साथ हमारी समझ में नहीं आते।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) i. तेज बौछारें गयीं - भादों गया
ii. नयी चमकीली तेज़ साइकिल - चमकीले इशारे
iii. अपने साथ लाते हैं कपास - छतों को भी नरम बनाते हुए

(ii) **हम समर्थ शक्तिवान** के माध्यम से कवि ने उन मीडियाकर्मियों पर व्यंग्य किया है जो स्वयं को सक्षम एवं शक्तिशाली मानकर अपाहिज व्यक्ति को दुर्बल समझने का अहंकार पाले हुए हैं। वे समझते हैं कि वे किसी का भी भाग्य और परिस्थिति बदल सकते हैं।

'हम एक दुर्बल को लाएँगे' के माध्यम से लाचारी, असमर्थता का भाव प्रदर्शित होता है। साक्षात्कारकर्ता किसी भी बेबस और लाचार व्यक्ति को लाकर उससे तरह-तरह के सवाल पूछकर उसका तमाशा बना सकता है।उसकी मजबूरी को मनोरंजन का साधन बना सकता है।

(iii) कृषक चाहता है कि समाज में परिवर्तन आए। वह खुशहाली की आशा से अधीरता के साथ बादलों को बुलाता है। वह शोषण से मुक्ति की आशा मन में लिए हुए है।

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

इसी प्रकार स्वतंत्रता पर भी क्या कोई आपत्ति हो सकती है? गमनागमन की स्वाधीनता, जीवन तथा शारीरिक सुरक्षा की स्वाधीनता के अर्थों में शायद ही कोई 'स्वतंत्रता' का विरोध करे। इसी प्रकार संपत्ति के अधिकार, जीविकोपार्जन के लिए आवश्यक औज़ार व सामग्री रखने के अधिकार, जिससे शरीर को स्वस्थ रखा जा सके, के अर्थ में भी 'स्वतंत्रता' पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती। तो फिर मनुष्य की शक्ति के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की भी स्वतंत्रता क्यों नहीं प्रदान की जाए?

जाति-प्रथा के पोषक, जीवन, शारीरिक-सुरक्षा तथा संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो स्वीकार कर लेंगे, परंतु मनुष्य के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए जल्दी तैयार नहीं होंगे, क्योंकि इस प्रकार की स्वतंत्रता का अर्थ होगा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता किसी को नहीं है, तो उसका अर्थ उसे 'दासता' में जकड़कर रखना होगा, क्योंकि 'दासता' केवल कानून पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है। उदाहरणार्थ, जाति प्रथा की तरह ऐसे वर्ग होना संभव है, जहाँ कुछ लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं। (बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर)

(i) **(क)** स्वाधीनता के साथ जीना
व्याख्या:
स्वाधीनता के साथ जीना

(ii) **(घ)** उसे अपनी इच्छा से कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाए
व्याख्या:
उसे अपनी इच्छा से कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाए

(iii) **(ख)** लोकतांत्रिक मूल्य सुदृढ़ होंगे
व्याख्या:
लोकतांत्रिक मूल्य सुदृढ़ होंगे

(iv) **(घ)** कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
व्याख्या:
कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v) **(घ)** इनमें से कोई नहीं
व्याख्या:
इनमें से कोई नहीं

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) लुट्टन ने कुश्ती के दाँव-पेंच किसी गुरु से नहीं बल्कि ढोल की आवाज या थाप से सीखे थे। ढोल से निकली हुई ध्वनियाँ उसे दाँव-पेच सिखाती हुई और आदेश देती हुई प्रतीत होती थी। जब ढोल पर थाप पड़ती थी तो पहलवान की नसें उत्तेजित हो जाती थी, उसका शरीर सामने वाले को मसलने और मन सामने वाले को पछाड़ने के लिए मचलने लगता था। पहली कुश्ती में जीतने पर उसने ढोल को गुरु मानकर प्रणाम किया था इसलिए लुट्टन पहलवान ने ऐसा कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है।

(ii) भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में भेदभाव किया जाता रहा है। 'भक्तिन' पाठ में यह अंतर स्पष्टतया दिखाई देता है। भक्तिन को तीन-तीन बेटियों को जन्म देने के कारण सास और जिठानियों की उपेक्षा सहनी पड़ी। उसकी जिठानियाँ बैठकर लोकचर्चा करती रहती थीं और उनके कलूटे लड़के धूल उड़ाते रहते थे जबकि भक्तिन और उसकी बेटियाँ दिन भर काम में लगी रहती थीं। वे द्वारा मट्ठा फेरती। कूटना, पीसना, राँधना, गोबर उठाना, कंडे पाथना आदि कार्य करती थीं। इतना ही नहीं, भोजन में भी जिठानियों के लड़कों को दूध-मलाई, राब-चावल खाने को मिलना, जबकि भक्तिन और उसकी बेटियों को काले गुड़ की डली के साथ कठौती में मट्ठा और चने-बाजरे की घुघरी ही खाने को मिलती।

(iii) लेखक के अनुसार, शिरीष के फूल तो बहुत कोमल होते हैं, परंतु उसके फल उतने ही मज़बूत होते हैं। नए फूलों के आने पर भी ये अपना स्थान नहीं छोड़ते। दूसरी तरफ़, शिरीष के फूल कोमल होने के कारण केवल भौंरों के पैरों का ही दबाव सहन कर सकते हैं। वे पक्षियों के पदों का दबाव भी सहन नहीं कर पाते इसलिए निबंधकार ने शिरीष के माध्यम से कोमल और कठोर भावों का सम्मिश्रण किया है।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) 'पर्चेज़िंग पावर' का अर्थ है पैसे की वह पावर, जिससे आप कभी भी महँगी-से-महँगी वस्तुएँ खरीद सकते हैं। मॉल की संस्कृति, सामान्य बाजार और हाट की संस्कृति सभी 'पर्चेजिंग संस्कृति, 'पर्चेज़िंग पावर' से चलते हैं। मॉल की संस्कृति में लगभग सभी प्रकार की वस्तुएँ एक ही स्थान पर ऊँची कीमतों में मिल जाती हैं। ग्राहक भी धनाढ्य वर्ग के होते हैं। अतः वे महँगी कीमत पर भी सामान खरीदने को तैयार हो जाते हैं। इसलिए 'पर्चेजिंग पावर' का रूप तो मॉल में ही दिखाई देता है।

(ii) लेखक इस बात से दुःखी होता है कि जहाँ चारों ओर पानी की इतनी कमी है, वहीं लोग बड़ी कठिनाई से इकट्ठा किया हुआ पानी 'इंदर सेना' के लड़कों पर फेंककर बर्बाद कर देते हैं। लेखक को यह बात तनिक भी बुद्धिमानी की नहीं लगती, लेकिन उसकी इस उलझन को उसकी जीजी ने सुलझाते हुए इस कृत्य के पक्ष में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए

i. जब हम किसी से कुछ पाना चाहते हैं, तो हमें पहले उसे कुछ चढ़ावा चढ़ाना पड़ता है। पानी फेंकना वस्तुतः पानी का अर्घ्य चढ़ाया जाना है।

ii. मनुष्य को पहले त्याग करना चाहिए, इसके पश्चात् ही फल की आशा (कामना) करनी चाहिए। त्याग उसी वस्तु का मान्य होता है, जिसकी त्याग करने वाले को भी बहुत आवश्यकता होती है। पानी के साथ भी यही तर्क लागू है।

iii. खेतों से अच्छी फसल पाने के लिए पहले उसमें अच्छे बीजों को डालना होता है। पानी पाने की इच्छा की पूर्ति के लिए भी बीज के रूप में पानी की बुवाई करना आवश्यक है, अन्यथा पानी की अच्छी फसल नहीं मिलेगी। इंदर सेना के सदस्यों पर पानी फेंका जाना वस्तुत: पानी की बुवाई ही है, जिसके बदले इंद्र कई गुना अधिक पानी हमें लौटाते हैं।

यदि हम लेखक के स्थान पर होते तो जीजी के तर्क सुनकर हम भी चुप रहते, क्योंकि तर्क करने से तो जीजी शायद ही कुछ समझ पातीं, पर उनका दिल अवश्य दुखता और इसी कारण उनका स्नेह हमारे प्रति घट जाता। लेखक की भाँति हम भी जीजी के प्यार और लगाव को खोना नहीं चाहते। यही कारण है कि आज भी हमारा समाज अनेक बेतुकी परम्पराओं में बद्ध है।

(iii) डॉ. आंबेडकर के अनुसार, जाति प्रथा के भीतर पेशे के मामले में लचीलापन नहीं होता। व्यक्ति को जाति के अनुसार उसके पूर्व निर्धारित कार्यों को करना पड़ता है, भले ही वह पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त हो। इस प्रथा के अंतर्गत व्यक्ति अपनी इच्छा से जीविका का चुनाव नहीं कर सकता।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) यशोधर बाबू एक सामाजिक, परंपरावादी एवं आदर्शवादी व्यक्ति थे। वे जीवन भर अपने आदर्शों का पालन करते रहे। बार-बार सम हाउ इंप्रोपर कहना यशोधर बाबू के व्यक्तित्व के निम्न पहलुओं को उजागर करता है-

- वे पुरानी पीढ़ी के मूल्यों को ही सही मानते थे।
- संयुक्त परिवार के आदर्शों का मोह,
- पुराने दिनों की यादों से घिरे रहना,
- नई पीढ़ी की सोच से दूरी,
- अंततः दूसरों की बात मान लेना इत्यादि।

(ii) जूझ के लेखक ने अपने मराठी शिक्षक सौंदलगेकर से निम्नलिखित गुणों और जीवन मूल्यों को ग्रहण किया है-

- विषय की गहराई में जाना,
- अभिनेयता,
- भाव तथा लय को महत्त्व देना,
- सकारात्मक दृष्टिकोण इत्यादि।

जी हाँ, आज के बदलते परिवेश में भी उनकी प्रासंगिकता है। क्योंकि व्यक्तित्व निर्माण के लिए, तथा किसी भी विषय-वस्तु की समझ ख़ुद में विकसित करने के लिए उक्त बातों को आधार स्तंभ बनाना बेहद ज़रूरी है। ये हमारे विकास में सहायक होती हैं।

(iii) हिमाचल प्रदेश के पालमपुर शहर में बैजनाथ का शिव मंदिर है। स्थापत्य कला में यह बेजोड़ मंदिर है। इसका निर्माण 1204 ई. में अहुक तथा मन्युक नामक के दो व्यापारियों ने करवाया था। कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण पांडवों ने आरंभ करवाया था परन्तु वे उसे पुरा न करवा सके। अतः आगे चलकर व्यापारियों ने इसका निर्माण कार्य पूरा करवाया। यह शहर से 16 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। हिन्दू देवता शिव को समर्पित इस मंदिर की स्थापना के बाद से लगातार इसका निर्माण हो रहा है। यह प्रसिद्ध शिव मंदिर पालमपुर के 'चामुंडा देवी मंदिर' से 22 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। बैजनाथ यह बहुत बड़ा नहीं है लेकिन यह कला का उत्कृष्ट नमूना है। इसे देखकर इसका आभास हो जाता है। इसकी दीवारों पर देवी-देवताओं की नक्काशी की गई है। मंदिर की भीतरी दीवारों पर सुंदर चित्र बनाए गए हैं। मंदिर के द्वार के आगे नंदी बैल की विशाल काले पत्थर की मूर्ति स्थापित की गई है। मंदिर के चारों ओर सुंदर प्रगाण हैं और उसमें भी देवी-देवताओं के छोटे-छोटे मंदिर बने हुए हैं। पत्थर पर किए गए काम का यह बेजोड़ नमूना है। पांडव कालीन इतिहास का यह गवाह है।